Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

अध्यापनशास्त्र का एक आधुनिक प्रवाह : दूरस्थ शिक्षा

डॉ. शैला चव्हाण,
सहाय्यक प्राध्यापिका,
ॲड. व्ही. एच. शिक्षणशास्त्र महाविदयालय,
नाशिक.

आओ आज हम सब पढे और आगे बढे इसके लिए हर एक को शिक्षा प्राप्त होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा प्राप्ती हर एक का अधिकार भी है। इसी कारण आज किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्ती में आनेवाली बाधा और समस्याओं पर यशस्वी रुप से उपाय की आवश्यकता है, जहाँपर छात्र चाहे जैसे अपनी शिक्षा पूर्ण करे, उससे लाभ उठाये और अपना जीवन सुखी और समृध्द बनाकर, अपने देश की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान दे। चारों और खुशहाली और अमन का वातावरण हो, कोई भी व्यक्ति शिक्षा प्राती से वंचित ना रहे, चाहे कारण कोई भी हो। परंतु उसके लिए विदयालयों में आना आवश्षक है। ज्ञान प्राप्ती और सुखी जीवन का यही सूत्र होगा।

यह सब परंपरागत अध्ययन – अध्यापन के माध्यम से याने कक्षाओं की चार दिवारों के अंदर संभव है। परंतु आज यह परंपरागत अध्ययन – अध्यापन प्रक्रिया तंत्रज्ञान और तंत्रविज्ञान से प्रभावित है। इसी तंत्रज्ञान –विज्ञान के प्रभाव के कारण अध्ययन – अध्यापन में नवनवीन संकल्पनाओं का समावेश हो रहा है। नवीनता , कमियों को कम करना, उपक्रमशीलता, सर्जनशीलता, कृतीयुक्त या सहयोगी अध्यापन इसमें से उद्देश्य कोई भी हो परंतु तंत्रज्ञान की सहाय्यता ली गयी। क्योंकि स्थल और काल की समस्याओं का समाधान भी तंत्रज्ञान दे रहा है। इसी कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में नए नए प्रवाह जन्म ले रहो है, उदा. ऑनलाईन अध्ययन, संमिश्र अध्ययन, फ्लिप्ड कक्षा, चिंतनशील अध्यापन और दूरस्थ शिक्षा। यहाँ पर हम दूर शिक्षा के बारें में विस्तार से चर्चा करेंगे। क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा के कारण जिनकी शिक्षा अधूरी है, या छुट गयी है, ऐसे सभी इसके माध्यम से शिक्षा का लाभ उठा रहे है। दूरस्थ शिक्षा मानों उनके अपना लक्ष्य प्राप्त करने की कुंजीसा बन गयी है।

परिभाषा :

१. **दूरस्थ शिक्षा :** युनेस्को (1979) व्दारा दि गयी परिभाषा

दूरस्थ शिक्षा मतलब ऐसी शिक्षा प्रकिया जिसमें छात्र और अध्यापक आमने – सामने न होकर उन्हें पत्रव्दारा शिक्षा प्रदान की जाती है। इसमें लिखित या ध्वनिमुद्रित अध्ययन साहित्य का मूल्यांकन करते हुए सुधार और मार्गदर्शक सूचनाओं के साथ वह साहित्य छात्रों को वापस किया जाता है।

२. **मूरे (Moore 1973):**

दूरस्थ शिक्षा याने सूचनात्मक पध्दतिका ऐसा समूह जिसमें अध्यापन यह अध्ययन क्रिया भिन्न होती है। जिसमें अध्ययन और अध्यापन यह तांत्रिक, इलेक्ट्रॉनिक या छपाई या अन्य मार्ग से जोडे जाते है।

३. **पॅराटन (Parra ton 1982) :**

दूरस्थ शिक्षा यह ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया है, की जिसमें अध्यापन प्रक्रिया स्थल और काल से अध्ययनार्थीसे दूर होती है।

इन परिभाषाओं के आधारपर दूरस्थशिक्षा की विशेषताएँ इस प्रकार होगी –

१) सुविधा के अनुसार शिक्षा
२) आवश्यकता के अनुसार शिक्षा
३) लचिलापन
४) छात्र और अध्यापक एक दूसरे से दूर
५) स्वयम् अध्ययन को महत्त्वपूर्ण स्थान
६) आय. सी. टी का प्रभावि रुप से उपयोग
७) व्यावसायिक शिक्षा को प्राधान्य
८) छात्रकेंद्रि त शिक्षा पध्दति
९) प्रभावि अध्ययन साहित्य निर्मिती

दूरस्थ शिक्षा आज एक प्रभावि आधुनिक शिक्षा का प्रवाह सिध्द होता है, क्योंकि पारंपारिक शिक्षा की कमियों को हम इससे दूर कर सकते है, क्योंकि यहाँ एकमात्र विशेषता यह होगी की यह शिक्षा बंधन मुक्त है। इसमें छात्र अपनी मर्जी, पसंद और अपने समयानुसार शिक्षा प्राप्त करता है। छात्र केंद्रि त पध्दति होने के कारण निम्नालिखित लाभ होते है –

दूरस्थ शिक्षा के लाभ :

१) **पदोन्नती :**

व्यवसाय प्राविष्ठ व्यक्ति अगर अपनी पदोन्नती करना चाहते है, तो उन्हें विशिष्ट उपाधि प्राप्त करनी होती है। परंतु व्यावसायिक व्यस्तता के कारण वह अगर संभव नही है, तो उन्हें इस प्रकार की शिक्षा से वह सुविधा प्राप्त हो सकती है।

२) **नविन ज्ञान :**

याने अपने व्यावसायिक क्षेत्र में आनेवाले नये नये शिक्षा प्रवाह और ज्ञान प्राप्त करते हुए व्यावसायिक कुशलता और सुलभता के लिए इस शिक्षा की पाठयचर्चा उपयुक्त होती है।

३) राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय पाठयचर्चा :

आज तंत्रज्ञान के आधारपर एक राज्य से दूसरा राज्य और एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र की शिक्षा पध्दति, परंपरा, आवश्यकता, समस्या आदि का अध्ययन वहाँ न जाते हुए कर सकता है, इससे समय और पैसे की बचत होती है।

४) शिक्षा का सार्वत्रिकीकरण :

स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात भारत का प्रथम स्वप्न रहा है, सबके लिए शिक्षा। परंतु अनेकानेक कारणोंसे यह स्वप्न आज भी अपूर्णसा ही है। क्योंकि अति दूर्गम इलाके, पिछडे वर्ग, आर्थिक कारणों से शिक्षा कहाँ प्राप्त करे? तो इस प्रश्न का उत्तर है, दूरस्थ शिक्षा। किसी भी कारणवश शिक्षा से वचित घटक इस प्रकार की शिक्षा का लाभ ले सकते है।

५) पिछडे इलाकों के लिए :

आज भी भौगोलिक विविधता के कारण हमारे देश के ऐसे कुछ भू – भाग है, जहाँ तक यातायात के साधनों का अभाव, व्यवसाय वृध्दि की मुश्किलें शैक्षिक सुविधा तथा आर्थिक विकास का अभाव होने के कारण एक बडा वर्ग शिक्षा के प्रभाव से दूर होने के कारण दूरस्थ शिक्षा इनके लिए वरदान सिध्द होती है।

६) बढती आबादी :

यह आज हमारी गंभिर समस्या है। इसी कारण आज हम सभी को परंपरागत या औपचारिक शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ हो रहे है। क्योंकि बढती आवश्यकताएँ और मर्यादित सुविधाओं का तालमेल करना असंभव होने के कारण औपचारिक शिक्षा पर पडनेवाला भार कम करने का यह एक प्रभावि साधन भी है।

७) उच्च शिक्षा के अवसर :

जो लोग किसी व्यवसाय हेतु आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उच्च शिक्षा की अभिलाषा रखते है, साथ ही जिन लोगों की उच्च शिक्षा प्राप्त अधुरी रह गयी हो, और समय की मांग की अनुसार आवश्यक उच्च शिक्षा पूर्ति का दूरस्थ शिक्षा यह एकमात्र साधन होता है।

८) समय की मांग :

आज का युग स्पर्धा का युग है। और ऐसी परिस्थितीयों में अगर हमें अपने पैर जमाने है तो, हमे भी नया ज्ञान, ज्ञान वृध्दि, ज्ञान का स्तर उँचा करना, तंत्रज्ञान का उपयोग करते हुए हम जहाँ पर है वहाँ से उँचाई तक जाने के लिए यशप्राप्ती के लिए प्रयास करने होगे, उसमें चाहे वह उच्च शिक्षा हो या प्रगत या आधुनिक व्यावसायिक कौशल हो इनकी वृध्दि हेतु दूरस्थ शिक्षा उपयुक्त होती है।

९) श्रम, पैसा तथा समय की बचत :

किसी भी कारणवश अगर शिक्षा प्राप्ती के लिए उचित श्रम, पैसा तथा समय देने में असमर्थ है और तो इस प्रकार की शिक्षा उसके लिए एक वरदान होती है। जो अपनी इच्छा के अनुसार काम करने की स्वतंत्रता देती है।

१०) घर पर सुविधा उपलब्ध होना :

इस शिक्षा प्रणाली का एक और महत्त्वपूर्ण अंग यह है की शारिरीक, आर्थिक पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, पिछडे इलाके, आदि कारणोंसे अगर शिक्षा प्राप्ती में बाधाएँ उत्पन्न हुई है तो, इस प्रकार की शिक्षा उनके प्रगति का राज मार्ग होती है।

दूरस्थ शिक्षा का यह महत्त्व देखते हुए यह स्पष्ट है की, जो दैनंदिन समस्याओं के कारण अपनी शिक्षा पूर्ण कर नहीं पाते, उच्च शिक्षा में दिक्कते होगी तो दूरस्थ शिक्षा इसका इलाज है। इसी कारण आज हमारे देश में ४०० से भी अधिक पाठयचर्चा विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संख्याओं के माध्यम से कार्यरत है। इनमें व्यावसायिक पाठयक्रमों को अधिक महत्त्व प्राप्त होता दिखाई देता है। क्योंकि यह व्यावसायिक कम या दीर्घ कालावधि के कोर्स पूर्ण करने के पश्चात छात्र उससे लाभान्वित होने के कारण, आज अधिकाधिक छात्रों का झुकाव इस प्रकार की शिक्षा प्राप्ती की ओर दिखाई देता है, क्योंकि इस प्रकार की संस्थाओं में छात्रों की संख्या लक्षणिय मात्रा में दिखाई देती है।

अतः आज सबके लिए शिक्षा अनिवार्य है, परंतु अगर कुछ छात्र या व्यक्ति उसे प्राप्त नहीं कर पाते, या अधुरा छोड देते है, तो उनकी शिक्षा प्राप्ती की मंशा इस प्रकार के शिक्षा प्रणाली से पूर्ण होगी। इस प्रकार की शिक्षा देनेवाली इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविदयालय और नासिकस्थित यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविदयालय यह इसके ठोस प्रमाण है, की यहाँ पर हजारो छात्र अपनी विदयाप्राप्ती और उसके सहारे सुखी जीवन के सपने साकार करने में क्रियाशील है। इसी कारण शिक्षा क्षेत्र का यह आधुनिक विचार प्रवाह सब पढे, सब आगे बढने के लिए प्रेरणादायी सिध्द हो रहा है।

संदर्भ :

१. चव्हाण, गणेश (२००९) अध्ययन अध्यापनः पारंपारिक ते आधुनिक, नित्यनूतन प्रकाशन, पुणे.
२. प्रा. पंकज नागमोती, प्रा. सुनिल देसले (२०१४) प्रगत अध्यापनशास्त्र, सात्विक प्रकाशन, नाशिक.
३. www.google.com